नेहरू की भारत की 'खोज' से मोदी के भारत में 'विश्वास' तक

रामनाथ कोविंद

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय इतिहास में 10 जून, 2026 एक विशेष अवसर को रेखांकित करता है। इस तारीख को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जवाहरलाल नेहरू को पीछे छोड़ते हुए भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री बनने का रिकॉर्ड बनाया। इस बात का अपने आप में एक ऐतिहासिक महत्व है, लेकिन पीएम मोदी का नेहरू से लंबा कार्यकाल, आज़ादी के बाद के भारत के इस निर्णायक कालखंड के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को नहीं दर्शाता है।

26 मई, 2014 से, भारतीय राजनीति में एक निर्णायक बदलाव आया, जो महात्मा गांधी, सरदार पटेल, बाबासाहेब अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सी. राजगोपालाचारी, के.एम. मुंशी और आधुनिक भारत के कई अन्य निर्माताओं द्वारा समर्थित भारतीयत्व की दिशा में है, जिन्होंने अपनी धरोहर और विरासत पर आत्मगौरव की गहरी भावना के साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पुनर्कल्पना की थी। आर्थिक विकास के क्षेत्र में, पीएम मोदी ने समावेश के साथ राजाजी के मॉडल को आगे बढ़ाया है। जैसा कि हम जानते हैं, राजाजी ने नेहरू की राजनीतिक अर्थव्यवस्था से जुड़े 'आदेश और नियंत्रण' मॉडल की कड़ी आलोचना की थी, जिसके परिणामस्वरूप 'कोटा, परमिट और लाइसेंस राज' पैदा हुआ था।

राजनीतिक विमर्श के क्षेत्र में, डॉ. अंबेडकर ने 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में अपने समापन भाषण में ऐतिहासिक और विद्वतापूर्ण वक्तव्य दिया था कि संसदीय लोकतंत्र के तत्व बौद्ध संस्थाओं में पाए जाते हैं, जो दो हजार पांच सौ साल पुराने हैं। उन बौद्ध संस्थाओं ने उस समय प्रचलित राजनीतिक संस्थाओं से लोकतांत्रिक प्रथाओं को अपनाया होगा। इस संबोधन के बावजूद हमारे छात्रों और न्यायविदों को यह विश्वास कराया गया कि हमारा लोकतंत्र पश्चिमी देशों से लिया गया है। पीएम मोदी वैश्विक मंचों पर यह कहते रहे हैं कि भारत लोकतंत्र की जननी है। उन्होंने विभिन्न अवसरों पर प्राचीन भारतीय लोकतांत्रिक लोकाचारों और प्रथाओं का उल्लेख किया है। विश्व इस तथ्य के प्रति जागरूक हो रहा है कि भारत न केवल सबसे प्राचीन है, बल्कि सबसे बड़ा और सबसे जीवंत लोकतंत्र भी है।

भारत के लगभग 100 करोड़ मतदाताओं का विशाल आकार शेष दुनिया के लिए एक चकित करने वाली परिघटना है। इसके साथ ही, मतदाताओं की संख्या आज़ादी के समय की भारत की कुल आबादी से लगभग तीन गुनी ज़्यादा हो गयी है। इस विशाल आकार के साथ चुनावी व्यवस्था की बढ़ती जटिलता भी जुड़ गई है। 2024 के आम चुनाव में 744 राजनीतिक दलों ने भाग लिया, जबकि 1951-52 के आम चुनाव में केवल 53 दलों ने हिस्सा लिया था।

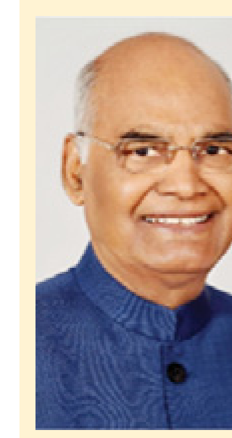

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद देश के पहले दशक और पिछले 12 वर्षों के बीच का अंतर एक बड़े बदलाव से परिलक्षित होता है। नेहरू काल की विशेषता सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर पश्चिम से मंज़ूरी और सहायता पाने की उत्सुकता थी। मोदी के वर्षों की विशेषता एक मजबूत घरेलू अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास है, जो गंभीर वैश्विक व्यवधानों का सामना करने में सक्षम है।

जवाहरलाल नेहरू के समय की तुलना में लोगों की आकांक्षाएं और निगरानी गुणात्मक रूप से बढ़ गई है। ऐसी बढ़ती उम्मीदों के अनुसार खुद को साबित करना और लोगों के साथ विश्वास का मजबूत संबंध बनाए रखना प्रधानमंत्री मोदी की असाधारण सफलता है, जिनकी स्वीकृति दर लगातार ऊंची रही है, जबकि जवाहरलाल नेहरू को अपने कार्यकाल के दौरान अपने कद और लोकप्रियता में भारी गिरावट देखना पड़ा था। 1950 और 1960 के दशकों के दौरान और यहां तक कि 1970 तक, दुनिया भर में कई लोकतांत्रिक रूप से चुने गए राजनेताओं का कार्यकाल लंबा रहा था। 21वीं सदी की दुनिया में राजनीतिक नेताओं का कार्यकाल अपेक्षाकृत छोटा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी इस वैश्विक रुझान के एक अपवाद रहे हैं।

सही कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति सशक्त और सम्माननीय नहीं बन सकता, यदि उसमें आत्मसम्मान की कमी है। भारत की गाथा में कई शताब्दियों से सभ्यतागत और सांस्कृतिक उत्कृष्टता समाहित रही है। हालांकि, औपनिवेशिक शासकों द्वारा देशवासियों में डाली गई हीनता की भावना स्वतंत्रता के बाद भी जारी रही। स्वतंत्रता के बाद भी कई औपनिवेशिक प्रथाएं निरंतर जारी रहीं और यहां तक कि उनका महिमामंडन भी होता रहा। एक छोटा-सा अभिजात्य समुदाय बनाया गया, जिसने थॉमस बैबिंगटन मैकॉले के विचारों और आदर्शों को कायम रखा। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में अंग्रेजी को शक्ति की भाषा के रूप में बढ़ावा दिया गया। नेहरू युग और उसके तत्काल बाद के समय में भारत की अधिकांश चीजों को लेकर अभिजात्य वर्ग में शर्मिंदगी की भावना देखने को मिली। भारतीय भाषाओं में बोलने, काम करने या अपने विचार व्यक्त करने वाले लोगों को नीची नजर से देखा जाता था। प्राचीन भारतीय परंपराओं में निहित सांस्कृतिक प्रथाओं और प्रतीकों की उपेक्षा की गई और विदेशी भूमि में विकसित विचारधाराओं और प्रथाओं को स्वीकार किया गया। भारतीय परंपराओं की जैविक निरंतरता और विकास की कमी के कारण आत्मविश्वास और नवाचार की कमी हुई। पीएम मोदी ने भारतीय भाषाओं, प्रणालियों, प्रतीकों और विश्वास प्रणालियों को सामने रखा। लोगों में भारतीय होने और भारतीयता व्यक्त करने में गर्व की भावना दिखाई पड़ती है। कई देशों की मेरी यात्राओं के दौरान, भारतीय मूल के कई लोगों ने मेरे साथ गर्व की इस नई भावना को साझा किया। अंग्रेजी भाषा के एक प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने मानसिक उपनिवेशवाद को 2035 तक समाप्त करने के लक्ष्य की बात कही। नवंबर 2025 में आयोजित इस कार्यक्रम में, पीएम मोदी ने भारत के लोगों से मैकाले की विरासत में निहित औपनिवेशिक मानसिकता का त्याग करने के लिए 10 साल की राष्ट्रीय प्रतिज्ञा लेने का आग्रह किया। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि भारत केवल एक उभरता हुआ बाजार नहीं है, यह एक आत्मविश्वासी नए मॉडल के रूप में उभर रहा है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद देश के पहले दशक और पिछले 12 वर्षों के बीच का अंतर एक बड़े बदलाव से परिलक्षित होता है। नेहरू काल की विशेषता सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर पश्चिम से मंज़ूरी और सहायता पाने की उत्सुकता थी। मोदी के वर्षों की विशेषता एक मजबूत घरेलू अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास है, जो गंभीर वैश्विक व्यवधानों का सामना करने में सक्षम है। मोदी युग की विशेषता यह भी है कि लोगों में भारतीय भाषाओं, सांस्कृतिक प्रतीकों, मूल्यों और परंपराओं के प्रति गर्व की मजबूत भावना है।

एक युवा लेकिन बहुत जानकार लड़के, जो इत्तेफ़ाक से हमारा रिश्तेदार है, ने एक बयान दिया, जो उसकी तीव्र बुद्धि और उसकी पीढ़ी के सोच को दर्शाता है। उसने मुझसे कहा कि मैं नेहरू के भारत में बड़ा हुआ हूँ, लेकिन मोदी के भारत में विकास कर रहा हूँ। लड़के ने यह भी मुझे समझाया कि उसकी पीढ़ी इस कारण बेहतर स्थिति में है।

(लेखक भारत के पूर्व राष्ट्रपति हैं।)

भारतीय राजनीति की शब्दावली बदलने वाले प्रधानमंत्री

डॉ. कर्ण सिंह

10 जून 2026 को भारत अपनी लोकतांत्रिक यात्रा के एक खास लम्हेक का साक्षी बनेगा, जब श्री नरेन्द्र मोदी अपने निरंतर कार्यकाल के आधार पर देश के इतिहास के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले प्रधानमंत्री बन जाएंगे, वह अपने किसी भी पूर्ववर्ती की तुलना में बिना किसी व्यवधान के प्रधानमंत्री पद पर अधिक दिनों तक कार्य कर चुके होंगे। स्वतंत्रता के समय से ही सार्वजनिक जीवन से जुड़ा रहने के कारण मुझे दीर्घकाल तक सेवा देने वाले पूर्व के दो प्रधानमंत्रियों के साथ निकटता से संवाद और कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू मेरे मार्गदर्शक थे। उन्होंने एक ऐसी सभ्यता की विरासत संभाली थी, जो उपनिवेशवाद, गरीबी, विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा से गहराई से आहत थी। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि इस विशाल और विविधतापूर्ण उपमहाद्वीप को एक सुदृढ़ एवं कार्यशील लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तित करना थी। श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ मैंने दस वर्षों तक उनके मंत्रिमंडल में कार्य किया बांग्लादेश के गठन के रूप में उनकी सबसे बड़ी सफलता और आपातकाल के दौरान उनके सबसे कठिन दौर—दोनों का प्रत्यक्ष साक्षी रहा। नरेन्द्र मोदी के समक्ष अगली चुनौती प्रधानमंत्री के रूप में उनके समग्र कार्यकाल को पीछे छोड़ने की होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नाम कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ दर्ज हैं। उन्हें जो भारत विरासत में मिला, वह जवाहरलाल नेहरू के दौर के भारत से बहुत भिन्न था। देश की जनसंख्या लगभग 34 करोड़ से बढ़कर लगभग 146 करोड़ तक पहुँच चुकी थी, जबकि मतदाताओं की संख्या लगभग 11 करोड़ से बढ़कर 83 करोड़ से अधिक हो गई थी। लगातार तीन लोकसभा चुनावों में अपने दल का सफल नेतृत्व करते हुए विजय सुनिश्चित करना अपने आप में एक असाधारण राजनीतिक उपलब्धि है। यदि अगले आम चुनाव में भी सफलता प्राप्त करते हैं, तो वह भारतीय राजनीति में एक और अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत कोविड-19 महामारी, वैश्विक मुद्रास्फीति के दबाव, भू-राजनीतिक संघर्षों तथा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानों जैसी चुनौतियों के बावजूद मजबूत आर्थिक वृद्धि बनाए रखते हुए विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में बना रहा है। उन्होंने ऐसे दौर में सरकार चलाई है, जहाँ टेलीविज़न, डिजिटल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग मंचों के माध्यम से अभूतपूर्व स्तर की रियल-टाइम निगरानी और जांच रही है। स्वच्छ भारत मिशन, ग्रामीण स्वच्छता का विस्तार, महिलाओं के लिए स्वच्छ रसोई ईंधन की उपलब्धता, ग्रामीण विद्युतीकरण, गरीबों के लिए आवास योजनाएँ, सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने वाली पहलें तथा करोड़ों नागरिकों को लाभान्वित करने वाले खाद्य सुरक्षा उपायों— जैसी उनकी सामाजिक कल्याण संबंधी पहलों ने आम भारतीयों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। यही कारण है कि इन्हें मोदी सरकार की प्रमुख उपलब्धियों में गिना जाता है।

शैक्षिक और स्वास्थ्य संस्थानों के विस्तार में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। जवाहरलाल नेहरू ने देश में पहले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना की थी। वहीं श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में आईआईटी, एम्स और आईआईएम की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ये संस्थान भारत के मानव संसाधन में एक महत्वपूर्ण निवेश का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश की बढ़ती व्यावसायिक, वैज्ञानिक एवं बौद्धिक आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। इसी प्रकार, बुनियादी ढाँचे का विकास भी इस कालखंड की एक प्रमुख विशेषता रहा है। राजमार्गों, हवाई अड्डों, रेलवे के आधुनिकीकरण, डिजिटल कनेक्टिविटी और सार्वजनिक अवसंरचना के तीव्र विस्तार ने दीर्घकालिक आर्थिक विकास की नींव रखने का प्रयास किया है। चाहे हर नीति से सहमति हो या न हो, इसके क्रियान्वयन का पैमाना निश्चित रूप से व्यापक रहा है।

उनके कुछ निर्णय निस्संदेह विवादास्पद रहे हैं, जिनमें नोटबंदी और अनुच्छेद 370 का निरस्तीकरण शामिल है। लोकतंत्र में बड़े नीतिगत कदम स्वाभाविक रूप से दोनों पक्षों से तीव्र मतभेद और चर्चाओं को जन्म देते हैं। फिर भी, श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने घोषित लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में दृढ़ संकल्प का परिचय दिया है।

विदेश नीति के क्षेत्र में भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। उनके व्यापक अंतरराष्ट्रीय संपर्कों ने भारत के प्रमुख शक्तियों के साथ-साथ विकासशील देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ किया है। ग्लोपबल साउथ में भारत की बढ़ती कूटनीतिक भूमिका और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी अधिक सशक्त उपस्थिति ने विश्व मंच पर उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। खाड़ी देशों के साथ उनकी कूटनीतिक पहल विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है, जिसने भारत के लिए अत्यंत रणनीतिक और आर्थिक महत्व रखने वाले इस क्षेत्र के साथ संबंधों को और गहरा किया है, भले ही उन्हें आशंका थी कि भारत धर्मनिरपेक्षता से दूर जा रहा है। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यद्यपि विश्वी हमारे संविधान की प्रस्तावना में शामिल है, दुर्भाग्यवश उसमें हिंदू-विरोधी मानसिकता विकसित हो गई थी। इस पृष्ठभूमि में, उनके कार्यकाल की एक प्रमुख उपलब्धि सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के बाद अयोध्या में श्री राम लला मंदिर का निर्माण है। लाखों भारतीयों के लिए, यह एक लंबे समय से चले आ रहे सभ्यता और संस्कृति से जुड़े मुद्दे का समाधान था।

श्री नरेन्द्र मोदी का सबसे स्थायी योगदान संभवत: यह रहा है कि उन्होंने भारतीय जनसमूह के विशाल हिस्सों से सीधे संवाद स्थापित कर भारत के भविष्य को लेकर विश्वास का संचार किया है। उनके नेतृत्व का काल उस दौर के साथ जुड़ा है, जिसमें भारत ने स्वयं को केवल एक विकासशील देश के रूप में नहीं, बल्कि बढ़ती आर्थिक, तकनीकी और सामरिक क्षमता से युक्तन उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में देखना शुरू किया है। अधिक विस्तार में जाए बिना यह कहा जा सकता है कि अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने परिवर्तन के एक महत्वाकांक्षी एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए लोकतांत्रिक शासन को बरकार रखा है। आने वाली चुनौतियाँ अब भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं—जैसे भारत की संघीय संरचना को सुदृढ़ करना, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, युवा जनसंख्या के लिए रोजगार सृजन, पर्यावरणीय चिंताओं का समाधान, और समावेशी विकास सुनिश्चित करना। किसी की राजनीतिक विचारधारा चाहे कुछ भी हो, श्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय राजनीति की शब्दावली को बदल दिया है। स्वतंत्रता के बाद से बहुत कम नेताओं ने मतदाताओं के साथ इतना सीधा जुड़ाव बनाया है या राष्ट्रीय विमर्श को इस स्तर तक प्रभावित किया है, जितना उन्होंने बीते दस वर्षों में किया है।

जैसे-जैसे भारत अपने विकास के अगले चरण में प्रवेश कर रहा है, इन कार्यों के लिए बुद्धिमत्ता, धैर्य और राष्ट्रीय सहमति की आवश्यकता होगी। स्वतंत्रता के आरंभ से ही भारत की यात्रा का साक्षी होने के नाते, मुझे उम्मी्द है कि आने वाले वर्षों में हमारा देश केवल शक्ति और समृद्धि में ही नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, करुणा और राष्ट्रीय एकता में भी आगे बढ़ेगा। इस वृहद प्रयास में, हम सभी को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र सेवा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सफलता की कामना करनी चाहिए।

(लेखक पूर्व सांसद हैं)

महात्मा गांधी के बाद सबसे प्रभावशाली नेता

अजय सिंह

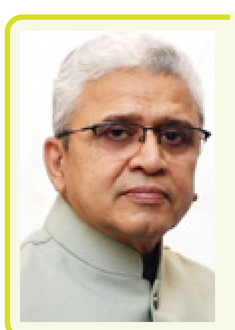

जम्मू और कश्मीर की स्थिति देश की आजादी के बाद से ही एक नासूर की तरह बनी हुई थी। राजनीतिक अनिश्चितता ने मुस्लिम बहुल घाटी में अलगाववाद और उग्रवाद को बढ़ावा दिया। 2014 से पहले, जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने कई प्रस्ताव पारित किए, जिनमें राज्य को 1953 से पहले की स्थिति में बहाल करने की मांग की गई थी, जो भारतीय संविधान के दायरे से बाहर था। एक झटके में, राज्य को दो भागों में बांटकर केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया, जिससे अनुच्छेद 370 अतीत का एक अप्रासंगिक अवशेष बन गया।

बदलाव के किसी युग को मापने के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ और समय अवधि ही पर्याप्त मापदंड नहीं हैं। ये महज आंकड़े मात्र हैं।

जब नरेंद्र मोदी देश के सबसे लंबे समय तक लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री बनेंगे, तो यह महज़ एक उपलब्धि या कार्यकाल की रिकॉर्ड अवधि को पार करने से कहीं अधिक होगा। समय की भावना को मात्र आंकड़ों में नहीं समेटा जा सकता और इसी लिहाज़ से वे भारत की प्रतिभा का प्रतीक हैं।

अपने सार्वजनिक जीवन में उन्होंने साधारण से असाधारण होने तक का सफर तय किया है। उनकी यात्रा एक साधारण आरएसएस कार्यकर्ता के रूप में शुरू हुई, जिन्होंने संघ परिवार से प्रेरणा ली। 1950 और 60 के दशक में, उन्होंने एक ऐसी विचारधारा का समर्थन किया, जो उस समय उनके गृह राज्य गुजरात में सबसे कम प्रचलित थी। उस समय के पारंपरिक राजनेताओं के उलट, उनके पास समर्थन करने के लिए कोई राजनीतिक या अभिजात्य पृष्ठभूमि नहीं थी। हैरो, ऑक्सफोर्ड, कोलंबिया या हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालयों से पढ़े-लिखे छात्रों के विशिष्ट समूह विश्व भर में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। सर विंस्टन चर्चिल और भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को 'हैरो बॉयज' के नाम से जाना जाता था। वे एक ही भाषा बोलते थे और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अभिजात वर्ग के समान सौहार्द साझा करते थे। मोदी इन सभी विचारधाराओं को पूरी तरह से गलत साबित करते हैं।

देश भर के आम लोगों से बातचीत करके उन्होंने जो जमीनी अनुभव हासिल किया, उससे उन्हें भारत के समाज, लोगों की चिंताओं और आकांक्षाओं की असाधारण समझ मिली। उन्होंने पेशे के तौर पर राजनीति को चुना और इसे अपने वैचारिक लक्ष्य के अनुरूप ढाला। उनके इस मिशन में उनकी दो ताकतवर खूबियों ने उनकी बहुत मदद की, व्यक्तिगत जीवन में उनका संयम और सार्वजनिक आचरण में उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण।

वे विरोधाभासों को बड़ी सहजता से संभालते हैं। उदाहरण के लिए, गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में, मोदी ने सब्सिडी पर निर्भर न रहने वाले विकास मॉडल को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाया। प्रधानमंत्री के रूप में, उन्होंने महामारी के प्रकोप के बाद देश को भुखमरी से बचाने के लिए दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम शुरू किया। उनकी सामाजिक आवास योजना और आयुष्मान भारत जैसी बीमा योजनाएं समाज के सबसे कमजोर वर्गों को कवर करती हैं और लोगों की सबसे जरूरी चिंताओं- रोटी, कपड़ा और मकान, साथ ही स्वास्थ्य का भी समाधान करती हैं। इन चिंताओं को 1960 के दशक की शुरुआत से लेकर हाल तक समाजवादियों ने राजनीतिक नारों के रूप में प्रचारित किया। आज के भारत में, ऐसे नारे व्यावहारिक रूप से अप्रासंगिक हो गए हैं।

दरअसल, मोदी ने देश की राजनीति को एक बिल्कुल नए ढंग से परिभाषित किया है। दशकों से देश को परेशान करने वाले मुद्दे अब इतिहास के पाठ्यक्रम का हिस्सा बन चुके हैं। वर्तमान में अयोध्या अब एक भव्य मंदिर की छवि प्रस्तुत करता है, न कि मंदिर-मस्जिद विवाद के स्थल की। देश भर में हिंदू मंदिरों का उनके प्राचीन वैभव में जीर्णोद्धार, सांस्कृतिक एकता का सशक्त संदेश देता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इस जीर्णोद्धार का सपना महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद देश के दौरे के दौरान देखा था। कांग्रेस में गांधी के अनुयायियों ने उन्हें निराश किया, लेकिन मोदी ने उस सपने को साकार किया।

जम्मू और कश्मीर की स्थिति देश की आजादी के बाद से ही एक नासूर की तरह बनी हुई थी। राजनीतिक अनिश्चितता ने मुस्लिम बहुल घाटी में अलगाववाद और उग्रवाद को बढ़ावा दिया। 2014 से पहले, जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने कई प्रस्ताव पारित किए, जिनमें राज्य को 1953 से पहले की स्थिति में बहाल करने की मांग की गई थी, जो भारतीय संविधान के दायरे से बाहर था। एक झटके में, राज्य को दो भागों में बांटकर केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया, जिससे अनुच्छेद 370 अतीत का एक अप्रासंगिक अवशेष बन गया। और इस तरह अलगाववाद का भूत झेलम नदी में गाद की तरह गहराई में दफन हो गया। इस क्षेत्र के लोगों में राष्ट्र के शेष भाग के साथ पूर्ण और बिना शर्त एकीकरण की गहरी इच्छा है। यही बात उत्तर-पूर्वी राज्यों पर भी लागू होती है, जो कुछ समय पहले तक उग्रवाद और हिंसा से ग्रस्त थे।

ऐसा लगता है कि मोदी ने अनजाने में ही गणित का एक सबक सीख लिया है: आप उस मानसिकता से समस्या का समाधान नहीं कर सकते, जिसने उसे जन्म दिया है। उन्होंने देश की राजनीतिक सोच को पूरी तरह बदल दिया और उसे एक अपरिवर्तनीय राह पर डाल दिया। सार्वजनिक जीवन के संचालन में इस तरह के बड़े बदलावों से तीव्र प्रतिक्रियाएँ आना स्वाभाविक है। यही वजह है कि मोदी को प्रशंसा से अधिक अक्सर आलोचनाएँ मिलती हैं। लेकिन वे अपने संकल्पों पर अडिग और दृढ़ बने हुए हैं।

अपने 24 वर्षों के शासनकाल में, पहले गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में और बाद में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में, मोदी ने अभूतपूर्व संकटों की पूरी श्रृंखला का सामना किया है, जो प्राकृतिक और राजनीतिक दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण थे। गुजरात में कार्यपालिका प्रमुख के रूप में उनके 13 वर्षों के कार्यकाल में उन्हें एक दशक (2004-2014) तक यूपीए की शत्रुतापूर्ण केंद्र सरकार का सामना करना पड़ा, जिसने राज्य को लगभग एक विरोधी के रूप में माना। उन्हें मनगढ़ंत आपराधिक मामलों में फंसाने के लिए सुनियोजित प्रयास किए गए।

इसी तरह, प्रधानमंत्री के रूप में उनके वर्तमान कार्यकाल में मानव इतिहास के सबसे भीषण संकटों में से एक, महामारी का सामना करना पड़ा। यूरोप और मध्य पूर्व में युद्धों के छिड़ने का भारत पर व्यापक भू-राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव पड़ा है, जिसके लिए कुशल कूटनीतिक रणनीति की ज़रुरत है। भारत में आतंकवाद को प्रायोजित करने से रोकने के लिए पाकिस्तान के खिलाफ दंडात्मक सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट पर हवाई हमला और ऑपरेशन सिंदूर शुरू करने के बावजूद, तनाव को कड़े नियंत्रण में रखा गया और इसे कभी भी पूर्ण पैमाने पर युद्ध में बदलने नहीं दिया गया।

उनके राजनीतिक विरोधी उन पर लगाए गए कई आरोपों को उठाएंगे और भारत जैसे समृद्ध लोकतंत्र में, मोदी जैसे व्यक्तित्व का अनेक तरीकों से विश्लेषण होना स्वाभाविक भी है। भारत के निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में उनका सबसे लंबा कार्यकाल कई घटनाओं से भरा रहा है और जनता की कड़ी निगरानी में रहा है।

माना जाता है कि इतिहास भावनाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त होता है। महात्मा गांधी को उनके समय में उपहास और प्रशंसा दोनों का सामना करना पड़ा। लेकिन उनका सबसे प्रभावशाली ऐतिहासिक मूल्यांकन विज्ञान के दिग्गज अल्बर्ट आइंस्टीन ने किया था, जिन्होंने लिखा था कि 'आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास कर पाएंगी कि उनके जैसा कोई हाड़-मांस का व्यक्ति इस धरती पर चला था।' इतिहास की सटीक भविष्यवाणी करने के लिए आइंस्टीन जैसी दूरदर्शिता की ज़रुरत होती है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए मोदी का ऐतिहासिक मूल्यांकन भी कम महत्वपूर्ण नहीं होगा।

(लेखक भारत के राष्ट्रपति के पूर्व प्रेस सचिव हैं और उन्होंने 'द आर्किटेक्ट ऑफ द न्यू बीजेपी: हाउ नरेंद्र मोदी ट्रांसफॉर्म्ड द पार्टी' पुस्तक लिखी है।)

दो प्रधानमंत्रियों की कहानी

बर्जिस देसाई

जवाहरलाल नेहरू ने 13 मई 1952 को देश के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। वे 27 मई 1964 को अपने निधन तक कुल 4,397 दिनों तक इस पद पर रहे। संवैधानिक इतिहास के जानकारों के अनुसार, 15 अगस्त 1947 को नेहरू केवल एक अंतरिम सरकार के प्रमुख थे, जो संविधान सभा के प्रति जवाबदेह थी और वही संविधान सभा अस्थायी संसद के रूप में कार्य कर रही थी। आज नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में 4,398 दिन पूरे करके नेहरू के इस कार्यकाल को पीछे छोड़ चुके हैं।

मोदी और नेहरू, भारत के सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने वाले नेताओं में शामिल हैं, लेकिन दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत तस्वीर पेश करते हैं। उनका पालन-पोषण, सोच, विश्वास, स्वभाव, कार्यशैली, मूल्य और राजनीतिक दर्शन एक-दूसरे से बिल्कुल अलग रहे हैं।

नेहरू का बचपन बेहद समृद्ध माहौल में बीता। उनके संपन्न बैरिस्टर पिता के 42 कमरों वाले भव्य घर में अंग्रेज़ गवर्नेस, आयरिश शिक्षक और कई नौकर-चाकर उनकी देखभाल करते थे। अपनी आत्मकथा में नेहरू ने लिखा है कि उनके घर में बगीचा, टेनिस कोर्ट, स्विमिंग पूल और सवारी के लिए एक टट्टू (पोनी) भी था। उन्होंने अपने बचपन को 'सुरक्षित और घटनाहीन' बताया था।

दूसरी ओर, नरेंद्र मोदी का बचपन बेहद साधारण परिस्थितियों में बीता। वे अपने पांच भाई-बहनों के साथ रहते थे और उनके पिता रेलवे स्टेशन पर एक छोटी सी चाय की दुकान चलाते थे। परिवार एक छोटे, अंधेरे और बिना बिजली वाले घर में रहता था, जहाँ भोजन भी सीमित मात्रा में उपलब्ध होता था। मोदी ने स्थानीय भाषा के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की और बचपन में रेडियो या अखबार जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं थीं। उनके घर में टूथब्रश, टूथपेस्ट, शॉवर, शौचालय या नल का पानी जैसी बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं थीं। 17 वर्ष की आयु में उन्होंने आध्यात्मिक खोज की व्यक्तिगत यात्रा पर घर छोड़ दिया और फिर कभी स्थायी रूप से वापस नहीं लौटे।

जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि बचपन में जब उन्होंने अपने पिता को आयातित लाल वाइन (रेड क्लैरेट) पीते देखा, तो उन्हें लगा कि वह खून पी रहे हैं और यह देखकर वे हैरान रह गए थे। दूसरी ओर, नरेंद्र मोदी ने बचपन में अपनी मां को दूसरों के घरों के बर्तन साफ़ करते देखा। उस समय राख में मिले कांच के छोटे टुकड़ों से उनकी उंगलियाँ अक्सर कट जाती थीं और उनमें से खून निकलता था।

नेहरू की सुसंस्कृत अंग्रेज़ी और ब्रिटिश शैली ने देश के अभिजात वर्ग को आकर्षित किया, जिन्हें लगता था कि वे उन्हीं में से एक हैं। नेहरू अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि को लेकर बहुत सजग थे और देश को अपने फैबियन समाजवादी विचारों के चश्मे से देखते थे, जिसकी कीमत भारत को चुकानी पड़ी। नेहरू ने कश्मीर के भारत में विलय में अनावश्यक देरी की, जनमत-संग्रह का वादा किया, मामला संयुक्त राष्ट्र में ले गए और भारतीय सेना को उस पूरे क्षेत्र पर कब्ज़ा करने की अनुमति नहीं दी, जिसका एक हिस्सा बाद में स्थायी रूप से पाकिस्तान के कब्ज़े वाले कश्मीर (पीओके) के रूप में रह गया। इसी तरह, चीन पर नेहरू के भरोसे के कारण भारत को रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण अक्साई चिन क्षेत्र खोना पड़ा, जिसे नेहरू ने कभी बंजर भूमि बताकर महत्वहीन बताया था। नेहरू ने सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत पाकिस्तान को सिंधु नदी प्रणाली के अधिकांश जल का उपयोग मिला। इस विषय पर नेहरू ने पानी को लेकर हो रहे विवाद को बहुत महत्व नहीं दिया था।

72 वर्ष बाद, नरेंद्र मोदी ने कश्मीर से विशेष दर्जा हटाकर एक ऐसा संवैधानिक कदम उठाया जिसे लंबे समय तक लगभग असंभव माना जाता था। यह विशेष दर्जा पाकिस्तान के प्रचार को बल देता था। वे यह भी कहते हैं कि मोदी सरकार ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने का निर्णय लेकर पाकिस्तान पर रणनीतिक दबाव बनाया। मोदी ने सीमाओं की सुरक्षा के लिए सक्रिय और संतुलित सैन्य प्रतिक्रिया की नीति को आकार दिया और देश की सुरक्षा को मजबूत किया। इसके बावजूद, बौद्धिक अभिजात वर्ग का एक हिस्सा मोदी जैसे जमीनी पृष्ठभूमि से आने वाले नेताओं को पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पाता, क्योंकि वे पारंपरिक अभिजात वर्ग की पृष्ठभूमि या अंग्रेज़ी शैली से नहीं आते। उनकी उपलब्धियों को स्वीकार किया जाता है, लेकिन उन्हें 'अपनों में से एक' नहीं माना जाता।

कई पीढ़ियों के नौकरशाहों के अनुभव के अनुसार मोदी काम करते हुए सीखने की असाधारण क्षमता रखते हैं। वे ध्यान से सुनते हैं, जिज्ञासु रहते हैं, छोटी से छोटी जानकारी में भी गहराई से जाते हैं, लगातार समीक्षा करते हैं, निर्णय लेते हैं और कार्यान्वयन पर नज़र रखते हैं। उनकी कार्यशैली में अधूरी तैयारी या लापरवाही के लिए कोई जगह नहीं है। नेहरू को बारीकियों और विवरणों में दिलचस्पी नहीं थी। उनका स्वभाव भावुक था, वे अक्सर भावनाओं के आधार पर फैसले लेते थे, अपने विचारों पर अड़े रहते थे और एक औसत प्रशासक थे। जे. आर. डी. टाटा, जो नेहरू के प्रशंसक थे, ने एक रिकॉर्डेड इंटरव्यू में कहा था कि नेहरू को अर्थशास्त्र पर चर्चा में कोई खास रुचि नहीं थी। बातचीत के दौरान वे अक्सर खिड़की से बाहर बगीचे में खेल रहे एक विशाल पांडा को देखने लगते थे।

(लेखक 'मोदी का मिशन' पुस्तक के लेखक हैं।)